विषय ⟶ मैं कौन हूँ ?

मेरी पहचान...?

एक बार की बात है, भारत के उत्तर भाग में एक छोटा और समृध्द गाँव हुआ करता था जिसका नाम था बोलपूर। कहने को तो यह एक छोटा सा गाँव था, लेकिन यह बड़ा अद्भुत था, और आकर्शक भी। बड़ा ही मनमोहक गाँव था बोलपूर। उस गाँव की तरह ही वहाँ के लोग भी बड़े ~~अच्छे~~ अच्छे और दयालू थे। वहाँ के बच्चें और बड़े बहुत इमान्दार थे। बोलपूर के निवासी - बड़े इमान्दारी के पैसे कमाते और बच्चें बड़ों का हाथ ~~ब~~ बटाते या हसी - खुशी खेलते रहते। वैसे ही एक दिन, जब बच्चें नदी तट पर खेलने आए तब वहाँ बारिश की वजह से मिट्टी फिसलने वाली बन गई थी। लेकिन बच्चें कीचड़ से ही खेलने लगे। यह देख, पास में एक वृक्ष के नीचे खड़ा राम अपने मित्र रघु को कहता है, " अरे, रघु! ~~वे~~ वो देख, तेरा भाय यश मिट्टी में खेल रहा है। राम और रघु, दानों ही

बारह वर्ष के लड़के थे। वे उन बच्चों पर नज़र रखने आए थे। वह तीन बच्चे - मनु, शज, आर लक्ष, उनकी निगरानी में थे। शज, रघु का छोटा भाई था। शम की बात सुनकर रघु बोला, "खेलने दे उसे, जब कपड़े गंदे करने के लिए उसे माँ से डाँट पड़ेगी तब समझ जाएगा।" इतना कहकर वे दोनों अपना काम - अर्थात बच्चों की निगरानी करते रहे। बच्चे वहीं खेलते रहे, और दोनों लड़के एक दूसरे से बात करने में व्यस्त हो गए। खेल - खेल के बीच, अचानक से मनु का ~~पैर~~ पैर फिसला और वह नदी में गिर पड़ा, उसका सिर एक बड़े से पत्थर पर टकराया और वह चिल्लाया, "आह.....!" मनु की चीख सुनते ही शम और रघु दौड़कर नदी के किनारे पहुँचे। शम ने नदी में छलाँग लगाई और मनु को बचा लिया, लेकिन तब तक मनु बेहोश हो चुका था। शम ने रघु से कहा, "तुम बाकी सब का ध्यान रखो, मैं मनु को लेकर घर जाता हूँ, मेरे मामा डॉक्टर है" इतना कहने के बाद शम, मनु को गोद में लिए अपने घर की ओर भागा। घर पहुँचते ही उसने अपने मामा को आवाज़ दी,

കേരള സ്കൂൾ കലോത്സവം തിയ്യതി..... പ്രോഗ്രാം കമ്മിറ്റി

उन्हें सारी बात बताई, और मनु को उन्हें सोप दिया। बहुत समय तक शम के मामा जी ने मनु का निरिक्षण किया। मनु के सिर पर लगी चोट पर दवा लगाई, पट्टी बाँधी और उसके होश आने का इंतज़ार ~~किया~~ करने लगे। शम और उसकी माँ भगवान से प्रार्थना करने लगे कि मनु सही सलामत हो। वे जानते थे कि चोट गहरी है, फिर भी उन्होंने हिम्मत नहीं हारी। इसके बीच मनु की माँ रोते हुए आई। उन्हें बस अभी खबर मिली थी कि उनका बेटा बेहाश हो गया। वह रोते हुए, शम की माँ के गले लगी और कहा, "क्या हुआ मेरे बेटे को, यह बेहोश क्यों है? उठ जा मेरे लाल, तू तो मेरा एक मात्र कारण है जीने का। उठ जा...." इतना सुन शम की माँ उन्हें ~~सांत्वना~~ उमीद देकर कहती है, "क्यों रो रही हो बहन, यह तो बस बेहोश है, अभी उठ ~~जायेगा~~ जायेगा।" इतना कहकर शम की माँ ने मनु की तरफ उँगली दिखाई। मनु को होश आ रहा था।

मनु ने आँखें खोली। यह देख मनु की माता की आँखों में आँसू भर आए। उन्होंने बोला,

"मेरा बच्चा!" मनु दर्द से तिनमिनाया और अपने आस-पास सभी को बड़े आश्चर्य से देखने लगा। उसके चहरे पर दर्द की लकीरें थी। उसके माथे पर पट्टी बँधी हुई थी। उसने अपने आस-पास देखा और फिर हलकी आवाज़ में बोला, "यह मैं कहाँ हूँ?" "कौन ~~है~~ हो आप लोग" यह सुनकर मनु की माँ की आँखें आश्चर्य के भाव से बड़ी हो गयी और आसू बहते रहे। तब डॉक्टर ने कहा, "इसकी स्मृती नष्ट हो चुकी है, इसे अब कुछ याद नहीं। सिर पर चोट लगने के कारण हुआ है यह सब।" यह सुनकर मनु की माँ रोने लगती है क्योंकि मनु उनका एक लौता बेटा था जिसके साथ ऐसा हुआ। उनका मनु के अलावा कोई नहीं था, उनके माता, पिता और पति स्वर्ग सिधार गए थे।

मनु की माता को रोते देख, राज के मामा कहते है, "घबराओ नहीं, जैसे-जैसे इसके माथे की यह चोट ठीक होती जाएगी, वैसे-वैसे उसकी ~~स~~ स्मृती भी लौट आएगी। इसलिए मत रोना" यह सुनकर मनु की माँ ~~थ~~ थोड़ी आश्वसित होती है। लेकिन उनके आसू नहीं रुकते।

(Note: This page will be scanned to publish the article in schoolwiki. So, Write neatly. Don't fold paper. Don't write overleaf).

यह देख मनु कहता है, "आप क्यों रो रही हो?" यह सुनकर उसकी माँ अपने आसू ~~कुछ~~ छिपाकर कहती है, "कुछ नहीं, ऐसे ही...।" मनु पूँछता है, "अच्छा! लेकिन मैं कौन हूँ???" यह प्रश्न सुनकर मनु की माँ ज़ोरों से रो पड़ती है और अपने बेटे की स्मृतियाँ वापस लाने, और उसकी देखबाल करने का ठान लेती है। ~~और~~ कई महिने बाद, मनु की स्मृतियाँ आ जाती है। और वह ~~अपने~~ अपनी जिंदगी खुशी से अपनी माँ के साथ जीता है।